K. L. Goyal
Lecturer Elect. Engg.
126-Alkapuri, ALWAR (Raj.)

卐 श्री अग्रसेन जयते 卐

अग्रवंश गान संग्रह

—: प्रकाशक :—

कृष्णमुरारी गोयल

22, मोती डूँगरी, अलवर

फोन नं० 2519, 3141

श्री अग्रसेन जयन्ति

के

उपलक्ष में उपहार स्वरूप

—: भेंट :—

मंत्री

अग्रवाल परिवार संगम

❋ गौरव गान ❋

भारत के कण-कण में अंकित, गौरव-गान हमारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है,

हम हैं वही जिन्होंने नगर बसाये हैं, राज्य चलाये हैं,
हम हैं वही जिन्होंने विष्णु लक्ष्मी से वर पाये हैं।

हम से शाह सिकन्दर ही नहीं देवराज तक हारा है,
अग्रसेन से राजा जिनको अग्रवंश अति प्यारा है ।

कौन नहीं परिचित जग में अग्रसेन सन्तानों से,
दिये हुये वचनों को पालो, हमने बढ़कर प्राणों से।

प्रेम, सत्य, अहिंसा, वीरता, न्याय धर्म उर धारा है,
अग्रसेन से राजा जिनको अग्रवंश अति प्यारा है।

हम गा रहे धन, यश, वैभव अपनी महिमा भारी है।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।

अग्रसेन से राजा जिनको अग्रवंश अति प्यारा है ।

अग्रवाल झण्डा गान

झण्डा लहर लहर लहराये,
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये।

केशरिया रंग बहुत सुहाये,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाये।
सहानुभूति व प्रेम, त्याग को,
हम सब जीवन में अपनाये ।। १ ।।

अठारह किरणों का गोला,
गौत्रों की बोली है बोला।
राज व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाये ।। २ ।।

एक रुपया संग ईंट जड़ी है,
इसमें समता बहुत बड़ी है।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा की याद दिलाये ।। ३ ।।

ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
समता हम जीवन में लाये ।। ४ ।।

झण्डा लहर लहर लहराये ।।
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये ।।

(२)

अग्रसेन की अमर कहानी

सुनो सुनो हे दुनिया वालो, अग्रसेन की अमर कहानी ।
अग्रसेन का जीवन कसा, जैसे गंगा माँ का पानी ।। सुनो ...

प्रताप नगर के राजा वल्लभ के घर जन्म था पाया ।
द्वापर युग के अन्तकाल में महापुरुष यह आया ।।
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में गौरव था छाया ।
महाप्रतापी अग्रसेन का, देवऋषि गुण गाया ।।
महालक्ष्मी सदा सहाई विघ्नविनाशक कल्याणी ।। सुनो ...

नागराज महीधर की कन्या से ब्याह रचाया ।
मिली माधवी अग्रसेन को, धन जन पशुधन पाया ।।
महाप्रतापी अग्रसेन से इन्द्रदेव घबराया ।
इन दोनों का श्री नारद ने फिर से हाथ मिलाया ।।
भले जनों की धन्य कमाई, सफल हुई नारद की बानी ।। सुनो ...

शादी करके अग्रसेन जी यमुना तट पर आये ।
महालक्ष्मी का तप करने संग, माधवी लाये ।
हुई प्रकट जब महालक्ष्मी, नव दम्पति हर्षाये ।
जुग २ जीओ, सदा सुख पाओ श्री माता के आशीष पाये ।।
बनो गृहस्थी उस आश्रम के, जिसका भरते हैं सब पानी ।। सुनो ...

बने अग्रगण राज्य जगत में, नव तरंग मन भाई ।
अग्रसेन ने अग्रोहा में, नगरी एक बसाई ।।

मह माडियाँ नई अटारियाँ, उपवन तलइया ।
बीच नगर में सुन्दर मन्दिर, जहाँ लक्ष्मी मैया ।।
वैश्यवंश की राजधानी गुण गाते थे सन्त और ज्ञानी । सुनो····

अग्रसेन ने अग्रोहा और आगरा शहर बसाया ।
सूर्यसेन को दिया आगरा अग्रसेन सुख पाया ।।
गऊ ब्राहाण के परम हिथैंषी, नाम जगत में पाया ।
साधु सज्जन, वैश्य महाजन का सम्मान बढाया ।।
अठारह गण प्रति निधियों से सना सुचालित की राजधानी । सुनो····

एक लाख परिवार बसाकर महिमा जग में पायी,
गर्ग मुनि की आज्ञा पाकर हृदय कली मुस्काई ।
करो अठारह यज्ञ वीरवर शोभो बढे सवाई,
जिसने यज्ञ किये जीवन में उनकी जग मैं धन्य कमाई ।।
अग्रसेन और सूर्य ने गर्ग मुनि की आज्ञा मानी ।। सुनो····

ऋषि मुनि और देव महाजन दूर-दूर से आए,
बड़े बड़े विद्वान धुरन्दर अग्रोहा में आए ।
ब्रह्मा के आसन पर बैंठे गर्ग मुनि मन में हरषाए,
सतरह यज्ञ हुये जब पूरण, मन में जागी एक पशेमानी । सुनो····

यज्ञों में पशुबलि का देना, पाप करम है भाई ।
नीच कर्म से सदा पातकी नरक कुण्ड में जाई ।।
वैश्य जन्म का परम धर्म है, पशु का पालन करना ।
अपने कुल की मर्यादा में, मिलकर जीना मरना ।।
हिंसा करना महापाप है, हिंसा कभी न करना ।।
ऐसे यज्ञ कभी न करना जिसमें होव जीव की हानि । सुनो····

वैश्य जनों के हृदय पटल पर खिच गयी गहरी रेखा,
सदा निरामिष भोजन करते वैश्य जनों को देखा।
दया धर्म से अग्रवालों की जगी भाग्य की रेखा,
परहितकारी जनहितकारो रखते हैं यह सच्चा लेखा ।।
वैश्य वंश की कुरबानी से अवगत है दुनिया के प्राणी। सुनो....

गर्ग, गौन और गोयल, मित्तल, जिंदल, सिंहल प्यारे,
बन्सल, कन्सल, ऐरन बिंदल, मंगल सारे।
धारण, ढिल, गोभिल, कुच्छल, गवन हमारे,
अग्रसेन के राज्य गगन के सुन्दर सभी सितारे ।।
इन्ही अठारह श्री वंशों से इनकी शोभा जग ने जानी ।। सुनो....

अग्रसेन ने नीति धर्म की एसी रीति चलाई,
दीन-दुखी को गले लगाया, समझा अपना भाई।
एक लाख परिवार में उसने शोहबत यह फैलाई,
एक ईंट रुपया देकर करो बराबर के तुम भाई।
एसी करनी से जग जाने, जीवन सफल हुआ जिंदगानी ।। सुनो....
रहन-सहन हो सीधा बोले प्रेम की मीठी बानी ।। सुनो....

हम अग्रवाल

हम अग्रवाल हैं अग्रवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है।
यह जन्म धाम, यह पुण्य धाम, महको प्राणों से प्यारा है ।।
हम अग्रोदक के हरकारे, हम हैं जनपद के रखवारे।
हम हैं समाज के सूत्रधार, समता का सदा संवारा है ।।

हम अग्रवाल .....

हम पर लक्ष्मी की छाया है शारदा मां ने अपनाया है।
नितधन बल मत से पूरित, शुचि श्रेष्ट भरा भण्डारा है ।।

हम अग्रवाल .....

हम छत्र चंवर के अधिकारी, तलवार कलम दोनों प्यारी।
केसरिया पगड़ी गादी पर, मणि मुकुट राज में धारा है ।।

हम अग्रवाल.....

हम सिन्धु सभ्ता के साक्षी, विख्यात विश्व में है झांकी।
इतिहास भारा है गौरव से, ज्यों सूरज किये उजियारा है ।।

हम अग्रवाल.....

हम हर प्राणी से प्यार करें हम शान्ति अहिंसा नेम धरें।
नर नारी युवक बूढ़े बालक, हित सबका सदा विचारा है ।।

हम अग्रवाल.....

अग्रोहा का इतिहास

सूर्यवंज के उत्तम कुल में, महीधर का नरेश हुआ.
उसके महा प्रतापी राजा, अग्रसेन का जन्म हुआ।
महाराज श्री अग्रसेन को, लोहागढ़ के जङ्गल में.
बच्चा जनती मिली सिंहनी, एक वृक्ष की छाया में।

जन्म लेते ही सिंह पुत्र ने नृप के गज पर वार किया,
गज मस्तक पर थाप मारकर देवलोक को गमन किया।
सिंहनी ने क्रोधित होकर के अग्रसेन को श्राप दिया,
पुत्र नहीं होगा तेरे भी तूने मुझको कष्ट दिया।

दुर्ग अटूट बनाया वहाँ पर, अग्रसेन महाराज ने,
राजधानी 'अग्रोहा' नामक नगर बसाया राजा ने।
पुत्र प्राप्त करने को नृप ने, वन में घोर तपस्या की,
बारह वर्ष बाद राजा को, कौशिक मुनि ने आज्ञा की

त्याग करो अब क्षात्र धर्म का वैश्व वर्ण स्वीकार करो,
पुत्र तुम्हारे तब ही होंगे, इसमें नहीं सोच विचार करो।
पुत्र हेतु राजा ने अपने, क्षात्र वर्ण को छोड़ दिया,
नौ पुत्र के पिता बने तब शिव भक्ति में ध्यान दिया।

नृप भक्ति से हुए प्रसन्न तो प्रकट भए शिव शंकर,
राजा को दे दिया, पुरोहित, नाम था जिसका कोहशंकर।
कोहशंकर थे वंशज ब्रह्मण, गौड़ गोत्र कैसनिया है,
अब तक जो अग्रवंश के पूज्य पुरोहित ब्राह्मण है।

अग्रोहा का इतिहास

सूर्यवंज के उत्तम कुल में, महीधर का नरेश हुआ.
उसके महा प्रतापी राजा, अग्रसेन का जन्म हुआ.
महाराज श्री अग्रसेन को, लोहागढ़ के जङ्गल में.
बच्चा जनती मिली सिंहनी, एक वृक्ष को छाया में।

जन्म लेते ही सिंह पुत्र ने नृप के गज पर वार किया,
गज मस्तक पर थाप मारकर देवलोक को गमन किया।
सिंहनी ने क्रोधित होकर के अग्रसेन को श्राप दिया,
पुत्र नहीं होगा तेरे भी तूने मुझको कष्ट दिया।

दुर्ग अटूट बनाया वहाँ पर, अग्रसेन महाराज ने,
राजधानी 'अग्रोहा' नामक नगर बसाया राजा ने।
पुत्र प्राप्त करने को नृप ने, वन में घोर तपस्या की,
बारह वर्ष बाद राजा को, कौशिक मुनि ने आज्ञा की

त्याग करो अब क्षात्र धर्म का वैश्व वर्ण स्वीकार करो,
पुत्र तुम्हारे तब ही होंगे, इसमें नहीं सोच विचार करो।
पुत्र हेतु राजा ने अपने, क्षात्र वर्ण को छोड़ दिया,
नौ पुत्र के पिता बने तब शिव भक्ति में ध्यान दिया।

नृप भक्ति से हुए प्रसन्न तो प्रकट भए शिव शंकर,
राजा को दे दिया, पुरोहित, नाम था जिसका कोहशंकर।
कोहशंकर थे वंशज ब्रह्मण, गौड़ गोत्र कैसनिया है,
अब तक जो अग्रवंश के पूज्य पुरोहित ब्राह्मण है।

इस समय में नागज की सत्रह कन्या बड़ी हुई,
एक जगह ही ब्याहूं इनको, यह नृप के मन चाह हुई।
विप्र खोजने निकले वर, सत्रह पुत्रों के पिता कहाँ,
अन्न जल लेंगे उसी जगह, सत्रह पुत्रों का पिता जहाँ।

अग्रोहा में अग्रसेन ने धैर्य विप्रगण को बँधवाया,
सत्रह पुत्र बताए अपने, विप्रों का अनशन छुड़वाया।
चिन्तित होकर अग्रसेन तब लगे ध्यान प्रभू का का करने,
आठ पुत्र दिये विष्णु ने राजा की इज्जत रखने ।।

धूमधाम से चले अग्रपति, नाग लोक को सजा बरात,
पुत्री तभी एक और जन्मी, नाग लोक अचरज की बात।
बेटा एक और होवे तो बात रहेगी राजा की,
या बारात अनब्याही जावे इज्जत बिगड़े राजा की ।।

अग्रसेन ने अपनी भागिनी के बेटे को याद किया,
आया तब असभोज भोनजा, पुत्र और एक प्रकट किया।
धूमधाम से ब्याह हुआ और सब जन अग्रोहा आये,
घर घर खुशियाँ छाई, महिलाओं ने मंगल गाये ।।

बहुत समय बीता पर दुल्हिन, नागिन बनी रही वे सब,
अग्रोहा में चिन्ता व्यापी, राजा भी चिन्तित थे तब।
श्रावण शुक्ला पंचमी को गई कन्याएँ बन कर नारी,
अपने चोले छोड़ गई थी, बाम्बी पूजन को सारी ।।

तब गजराज भानजे ने, चोले डाले अंगारों में,
इसी से बनी रही वे नारी, सुख पाया रनिवासों में।
उनके ही वंशज हैं हम, जो अग्रवाल कहलाते हैं,
अग्रवाल इतिहास पुरातन, उसका सार बताते हैं ।।

अग्रवालों उठो, वक्त खोओ नहीं

अग्रवालो उठो, वक्त खोओ नहीं
बहुत सोये गफलत में, सोओ नहीं
देश अपने में जिनका अटल राज्य था
वैश्य जाति के सर पर जो सरताज था
थाती उनसे मिली ये भुलाओ नहीं ।। १ ।।

मातृ लक्ष्मी का हमको यह वरदान है
एकता से जो रहता वह धनवान है
धन के चक्कर में हम आप ऐसे पड़े
क्या थे क्या हो गये, भाई भाई लड़े
फूट के बीज अब और बोओ नहीं ।। २ ।।

क्या कमी है, विधाता ने सब कुछ दिया
धन दिया, बल दिया, बुद्धि दी, गुण दिया
कमी है बड़ी, यह कमी खल रही
आपसी फूट अपने ही घर पल रही
फूट जड़ से उखाड़ो रे सोओ नहीं ।। ३ ।।

अग्र के वंशजों, अग्र के वंशजों
अग्रगामी सदा अब भी आगे बढ़ो
छोड़ दो दुश्मनी, मित्रता सीख लो
खो दिया जो, उसे बढ़कर हांसिल करो
अपनी करनी पे अब आगे रोओ नहीं ।। ५ ।

दान देने की हम सब में ताकत बढ़ी
'भामाशाह' से जुड़ी है हमारी कड़ी
जिनके सहयोग से सारी सेना लड़ी
उनके वंशज हैं, फिर फूट कैसे पड़ी
फूट के बीज आगे को बोओ नहीं ।। ५ ।।

अग्रोहा की मर्यादा

ऐ अग्रसेन की सन्तानों, अब तो तुम खुद को पहचानो,
तुम भूल गये जिस गौरव को, कुछतो तुम उस की भी जानो।
उस गौरव को तुम याद करो, अग्रोहा में दबा हुआ,
अब प्रगट करो उस वैभव को जो टीलों में है छुपा हुआ।

जो अग्रोहा तीर्थ अपना, उसको क्यों तुमने छोड़ दिया,
जो भूमि स्वर्ग समान रही, उससे क्यों नाता तोड़ लिया।
क्यों बिछुड़ गये तुम, अपनों से क्यों दूर हुए अग्रोहे से,
तुम कान लगा कर सुनो जरा, जो रुदन हो रहा टीलों से।

क्यों भूल गये मर्यादा को, जो अग्रसेन ने डाली थी,
उस परम्परा को क्यों तोड़ दिया जो ईंट रुपये वाली थी।
अब समय आ गया जागो तुम, वो खंडहर तुम्हें बुलाते हैं,
उन टीलों को जाकर देखो, जो कथा अग्र की गाते हैं।

मत स्वार्थ में डूबो अब तो मत, लड़कों का व्यापार करो,
गर सच्चे अग्रवंशी हो तो कुछ जाति का उद्धार करो।
इसे मात्र कविता मत समझो, गुब्बार ये मेरे दिल का है,
कुछ मनन करो इन शब्दों पर जो अग्रवंश से बोला है।

अग्रसेन गरिमा

तुम अग्रज्योति की प्रथम किरण
तुम साम्य वाद के प्रथम धाम
तुम वैश्य वंश के प्रथम राज
तुम बांधवता की प्रथम शोध

तुम द्वापर युग में जन्मे थे
तुम देव युद्ध में चमके थे
तुम अलग रहे हिमगिरी सम थे
तुम मरुधर में सागर सम थे

तुम ने फहराई कीर्ति ध्वजा
तुम से की सन्धि पुरन्दर ने
तुम बने मित्र पांड़व कुरु के
तुम ने देखा उत्थान पतन ।।

तुम नाग वंश के मान्य बने
तुम लक्ष्मी के वरदान बने
तुम धन कुवर पति कहलाए
तुम को पाकर हम धन्य हुए।

हे अग्रसेन तुमको प्रणाम

भारत माता के पुन्य पूत,
हे मानवता के अग्रदूत।

हे अग्रोहा के संस्थापक,
हे अग्रसेन तुमको प्रणाम।

जो ज्योति बने मानवता की,
तुमने वो लिखे अमर लेख।

जो जागृति मन्त्र बने युग की,
वो खेंची तुमने अमिट रेखा।

अंकित युग के वक्षस्थल पर,
हे देव तुम्हारा पुण्य नाम ॥ १ ॥

देकर समता बन्धुत्व भाव,
दुखियों को तुमने दिये प्राण।

जाति को एकता मन्त्र दिया,
वीरता गुणों से दिया त्राण।

झुक कर आंधी तूफानों से
तेरे चरणों को लिया थाम ॥ २ ॥

तुम सिद्ध तपस्वी योग्य यती,
हे समरांगण की कीर्ति धवल।

यूनान सिकन्दर ने देखा,
तेरे पौरुष का सूर्य प्रबल।

तेरे गौरव को रथ को गति ने,
पाया न कभी दो दो क्षण विरान ॥ ३ ॥

बाल-सामूहिक-गान

अमर हमारा अग्रवंश है, हमारे गान हैं,
हम न रुकेंगे, हम न झुकेंगे, अग्रसेन सन्तान हैं।

जाति हमें प्राणों से प्यारी, उसकी सेवा धर्म हमारा,
अग्रसेन-पथ वरण करेंगे, यह सच्चा कर्तव्य हमारा।
इसका हम उत्थान करेंगे, इसके हम उत्थान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है अमर हमारे गान हैं ॥ १ ॥

हम चन्दा बनकर चमकेंगे, सूरज बनकर दमकेंगे,
होठ-होठ की हंसी बनेंगे, हंसा-हंसा कर हंस लेंगे।
अग्रवंश अभिमान बनेंगे, अग्रवंश अभिमान है,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ॥ २ ॥

अग्रसेन पर चँवर डोलते, उसके चाँद सितारे हैं,
नई रोशनी नई हवा में, हमने प्राण सँवारे हैं।
हम फूलों से मुस्कायेंगे, फूलों सी मुस्कान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ॥ ३ ॥

साम्य और समता लायेंगे, सभी विषमता हर लेंगे,
दुख दारिद्र मिटाकर सबका, अग्रसेन-पथ वर लेंगे।
अग्रसेन के स्वर गायक हम, अग्रसेन की शान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ॥ ४ ॥

अग्रसेन की विजय पताका, प्राणों से भी प्यारी है,
नई उमंगों में भरकर हम, सब रखवारी हैं।
इसकी शान न जाने देंगे संकल्पी आन है,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ॥ ४ ॥

माटी तक जिसकी चन्दन है

गौरव महिमा से सराबोर,
माटी तक जिसका चन्दन है।
उस पुण्य-पुण्य भूमि अग्रोहा को,
सबका श्रद्धान्तर वन्दन है।
नजरें नीचे झुक जाती हैं,
अवरुद्ध कण्ठ हो जाता है।
अग्रोहे का चिन्तन करते तो,
साँस गले तक आता है।
यह अग्रवंश का तीर्थ धाम,
जो सदियों से वीरान पड़ा।
वह आज धूल में ढका हुआ,
जिसका अतीत था स्वर्ण जड़ा।
जहाँ ऋद्धि सिद्धियाँ बसती थी,
क्या फिर से उसे बसाओगे।
तुम तनिक उलीचो माटी को,
इतिहास तड़फता पाओगे।

दिन के फेरे शुरू करो

अग्र बन्धुओं उठो जरा, और रूढ़वादिता दूर करो,
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन के फेरे शुरु करो।
बुरे कर्म जितने भी हैं, वो अँधियारे में होते हैं,
आतिशबाजी, शराब, भंगड़ा, कुकर्म की जड़ होते हैं।
लड़के-लड़कियाँ संग नाचें, होश हवाश सब खोते हैं,
चरित्र हीनता फैलाकर वो कुल के नाम डुबोते हैं।
अपने हित की बात जरा कुछ हृदय में मंजूर करो,
अग्र बन्धुओं उठो और रूढ़वादिता दूर करो।
समय दिया है आठ बजे का, कर इन्तजाम सब थकते हैं।
नौ, दस, ग्याहर, बजे देखकर, लोग निराश लौटते हैं।
भंगड़ा करते आधी रात में, खाना ठण्डा खाते हैं,
बदहजमी हो जाती है और वो बीमार पड़ जाते हैं।
अब तो गन्दे रिवाज, सब जड़ से चकना चूर करो,
अग्र बन्धुओं उठो जरा औ रूढ़वादिता दूर करो।
दिन के फेरे करने से एक नया हर्ष छा जाता हैं,
आतिसबाजी और लाईट का धन अपव्यय बच जाता है।
रात ठहरने के झंझट से, हर एक छुट्टी पाता है,
बिस्तर कपड़ों की तैयारी का बोझ दूर हो जाता है।
ऐसी अच्छी बातों का तो प्रचार जरूर करो।
अग्र बन्धुओं उठो जरा और रूढवादिता दूर करो,
सुबह को जाना, शाम को आना, दिन का विवाह रचाने में।
दिन के फेरे स्वयम्बर से होते थे पूर्व जमाने में,
सौ झंझठ और खर्चा होता, बरात को रात ठहराने में।
वर और कन्या पक्ष सुखी हैं कार्य को शीघ्र निपटाने में,
शुभ काम में देरी क्या बस सबको ही मजबूर करो।
दिन के फेरे अपनाएँ सब, आनन्द से भर पूर करो,
अग्र बन्धुओं उठो जरा और रूढ़वादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन के फेरे शुरु करो।

रहनुमा अग्रसेन

पाप की चारों तरफ थी जब घटा छाई हुई,
और बदी का जोर था नेकी थी घबराई हुई,

मिट गया था धर्म का जब देश में नामो निशा,
नेक कामों की जमाने में उड़ी थी धज्जियां।

बे जबां मासूम पर चलती थी छुरियां जुल्म की,
खूने नाहक से हुआ करती थी जालिम को खुशी।

धर्म की राहों का जबकि रहनुमा कोई न था,
कौम की किश्ती का जबकि नाखुदा कोई न था।

चांद एक पैदा हुआ था फिर हमारे देश में,
देवता आया था कोई आदमी के भेष में।

जिसने आते ही मिटाया पाप की बुनियाद को,
कर दिया था शायद उसने फिर दिल नाशाद को।

रहम का पुतला सरासर दान की तसवीर था,
कौमें अग्रवाल के ख्वाबों की वो ताबीर था।

सब बराबर उसे भूखा कोई जरदार था,
आदमी था या फरिश्ता या कोई अवतार था।

मैं बता दू कौन था दुखिया दिलों का चैन था,
ए "मनोहर" रहनुमा अपना वो अग्रसेन था।

झण्डा गीत

ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है,
भारत के कण-कण में अंतिम, गौरव-गान हमारा है।

हम हैं वही जिन्होंने सदियों तक साम्राज्य चलाये थे,
हम हैं वही जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु से वर पाये थे।

हम से सिकन्दर तो क्या देवराज तक हारा है,
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।

कौन नहीं परिचित जग में अग्रवंश सन्तानों से,
दिये हुये वचनों को पालो, बढ़कर अपने प्राणों से।

सत्य अहिंसा प्रेम वीरता, न्याय धर्म उर धारा है,
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।

छत्र चँवर नौवत निशान के, हम हीं केवल अधिकारी,
भाट गा रहे धन वैभव की, यश गौरव महिमा भारी।

आज जाति के लिये हमारा, ये ही कौमी नारा है,
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।

❋ गीत ❋

(तर्ज—पहली मुलाकात है)

आज तो जयन्ति प्यारी आई ले बहार है,
चारों दिशि छाय रही खुशियां अपार है ।।टेर।।
चांदी के आसन पे बैठे महाराज हैं,
मस्तक पे सोये क्या सोने का ताज हैं,
कानों में कुण्डल औ हिवडे पे हार है ।
चारों दिशि छाय रही खुशियां अपार है ।।१।।
ढोलक, नगाड़े, शहनाई की तान है,
आगे आगे बज रहे नौबत निशान है,
मस्ती में झूम रहे सारे नर नार हैं ।
चारों दिशि छाय रही खुशियां अपार हैं ।।२।।
डंडे बजाय रहे, नाच रहे प्यार से,
खेल रहे बरछी औ भाले तलवार से,
दर्शक गणों से भरे चारों बाजार में,
चारों दिशी छाय रही खुशियां अपार हैं ।।३।।
झण्डा केसरिया कर में उठा के,
महाराजा की जय जय मनाके,
बढ़ते रहे बस ये ही विचार ।
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार हैं ।।४।।
कन्धे से कन्धा मिलाते चलेगें,
हाथों में हाथ डाले आगे बढ़ेगे,
"अग्रवाल संघ" की ये ही पुकार है,
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार हैं ।।५।।

—❋—

झण्ड़ा गायन

फर फर फहरे केसरिया, घर घर ल०राये प्यारा,
झण्डा हमारा प्यारा, झण्डा हमारा ।। टेर ।।

(१)

इस झण्डे का सारे जग में मान है मान है,
अग्रवंश का ये प्यारा निशान है, निशान है ।
ऊँचा इसे उठावो रे, हिलमिल के गावो सारे, आखों का तारा,
प्यारा, झण्डा हमारा ।।

(२)

इस झण्डे ने कितने ही युग देखे हैं, देखे हैं,
इसके रंग में रंगे हमारे लेखे हैं, लेखे हैं ।
मतना इस भुलावो रे, शीश नवावो इसको, पौरष तक इसे हारा
झण्डा हमारा ।।

(३)

ये झण्डा ही त्याग तपस्या का साखी है, साखी,
इसने ही नित आन वंश की है राखी है राखी ।
सत्य अहिंसावादी रे, धर्म निभाया इसने, दुख सुख का एक सहारा
झण्डा हमारा ।।

(४)

हम भी इस पर निज सर्सस्व चढ़ायेंगे, चढ़ायेंगे ।
प्राण निछावर कर कर मान बढायेंगे, बढायेंगे ।
"अग्रवाल संघ" गावे रे, समझाये हित चित सेती, तन मन, धन
इस पर सारा । झण्डा हमारा ।।

* गीत *

(तर्ज:—ज्योत से ज्योत जगाते चलो)

हाथों में हाथ मिलाते चलो, जाती के फूल खिलाते चलो,
रस्ते में आये जो भाई सखे, उनको गले से लगाते चलो।
जाती के फूल ॥

तुम हो अग्रसेन के वंशज अग्रवाल कहलाते हैं,
अग्रोह के राज्य चिन्ह भी अब तक पूजे जाते हैं।
वही इतिहास बनाते चलो। जाती के फूल ॥

वीर सिकन्दर तुमसे लड़कर मांग चुका है पानी,
अरे संगठन में बल होता है झूँठी नहीं कहानी।
पुरुसत्व अपना निभाते चलो। जाती के फूल ॥

ईंट रुपये की गाथा ने तुमको एक बनाया,
डोल गया इन्द्रसान तुमने काल नसाया।
राह के रोडे हटाते चलो। जाती के फूल ॥

आज समय ने पल्टा खाया भूल गये सब बातें,
अपना और पराया भूले नोटों को अपनाते।
स्वार्थ को दूर भगाते चलो। जाती के फूल ॥

❋ गीत ❋

(तर्जः—ये दो दिवाने दिल के)

ऐ अग्रसेन के लालो ऐ प्यारे अग्रवालो,
चलो रे चलो रे चलो रे देख भाल ओ ओ ओ ।।

जती तुमारी देखो पिछड़ी क्यों जाती,
पिछडे का होता जग में कोई ना साथी,
सोचो विचारो मन में खोवो ना झुठे धन में,
चलो रे चलो रे चलो रे देख भाल ओ ओ ओ ।।

मिलनी मिठाई लेते नहीं शरमाते,
नोटो की थैली आगे शीश झुकाते,
ओरों की करते बाते पर खुद की जेब भरते,
चलो रे चलो रे चलो रे देख भाल ओ ओ ओ ।।

पूंजी है आनी जानी ठहर ना पाती,
आई न संग किसी के नहीं संग जाती,
सोचो ये बातें सारी इतनी है विनय हमारी,
चलो रे चलो रे चलो रे देख भाल ओ ओ ओं ।।

जाती की जाजम हमने खुद ने बिछाई,
"अग्रवाल संघ" में हैं सभी एक भाई,
जाती के बीच कोई छोटा बड़ा न होई,
चलो रे चलो रे चलो रे देख भाल ओ ओ ओ ।।

❀ आरती ❀

धन–धन अग्रसेन अवतार,
उतारूँ आरती आज तिहारो ।

थाको शुभ दिन आयो आज,
रखियो अग्रवंश री लाज ।
सारा म्हाका बिगड्या काज,
जाति पर कृपा करो महाराज ।

उतारूँ आरती आज तिहारी,
धन–धन अग्रसेन अवतार ।

थारो सुन्दर है स्वरूप,
प्रभूजी थे भूपन का भूप ।
थाकी महिमा अपरम्पार,
करियो हमारी नैया पार ।

उतारूँ आरती आज तिहारी,
धन–धन अग्रसेन अवतार ।

म्हाकी सदा बचाई लाज,
थाकां पूज रहे हम ताज ।
तिहारो यह अनमोल समाज,
जय–जय अग्रसेन महाराज ।

धन–धन अग्रसेन अवतार,
उतारूँ आरती आज तिहारी ।

K. L. Goyal
Lecturer Elect. Engg.
126–Alkapuri, ALWAR (Raj.)

मंत्री
अग्रवाल परिवार संगम

मुद्रक—दीवानचन्द रामरिछपाल, अलवर।